

# विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

## शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत व्याकरण

11 जुलाई 2020

वर्ग अष्टम

राजेश कुमार पाण्डेय

## एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

### सन्धि - प्रकरणम्

7. पररूप - सन्धि :- अकारान्त उपसर्ग के बाद यदि ए/ओ से प्रारम्भ होने वाली धातु हों तो दोनों मिलकर पररूपं अर्थात् ए/ओ हो जाते हैं।

प्र + एजते - प्रजते (अ + ए = ए)

उप + ओषति - उपोषति (अ + ओ = ओ)

प्र + उष्णम् - प्रेषणम् (अं + ए = ए )

8. प्रकृतिभावः - जहाँ पर दो स्वर के मेल से होने वाली सन्धि को रोक दिया जाता है, उसे प्राकृति भाव कहते हैं। इसमें वर्णों के विकार अर्थात् परिवर्तन का भाव नहीं होता। प्राकृतिकभाव का अर्थ है - जैसे है वैसा ही रहना। अतः इस सन्धि के अन्तर्गत दोनों वर्ण जैसे थे वेसे ही रहते हैं।

(क) द्विवचनान्त शब्दों कु इ, उ तथा ए का प्रकृतिभाव

(ख) अदस् शब्द के रूपों के अन्त में म् के बाद यदि ई, ऊ, ए आए, तो सन्धि नहीं होती।

(क) द्विवचनान्त इकारान्त, आकारान्त तथा एकारान्त शब्दों के ई, ऊ तथा ए का प्रकृतिभाव

मुनी + इमौ - मुनी इमौ

साधु + आगच्छतः - साधु आगच्छत

(ख) अदस् शब्द के रूपों के अन्त में म् के बाद आने वाले ई, ऊ, ए आएँ तो प्रकृतिभाव

अमी + अत्र - अमी अत्र

अम् + आगच्छतः - अम् आगच्छतः

